श्रीगोरखनाथ मन्दिर में 'श्रीराम–कथा ज्ञान–यज्ञ'

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 23 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत आज कथा के दूसरे दिन कथाव्यास काशी से पधारे **जगदगुरू अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमल दास वेदान्ती जी महाराज** जी द्वारा **'श्रीराम कथा'** दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में श्रीराम कथा की अमृतवर्षा प्रारम्भ हो गई। कथाव्यास श्रीराम कथा के महत्व का प्रतिपादन करते हुए कहते है कि अगस्त ऋषि द्वारा भगवान श्रीराम की कथा भगवान शिव द्वारा श्रवण किया जा रहा था और सती द्वारा कथा को ध्यान से न सुनने का परिणाम हुआ कि सती के मन में भगवान के प्रति संशय उत्पन्न हुआ। यही से कथा में भगवान शिव और पार्वती केन्द्र में आ जाते है। कथा को विस्तार देते हुए कथाव्यास भगवान शिव कैलास वापस आते समय जगद्जननी सीता के वियोग लीला करते भगवान राम के दर्शन का संवाद प्रारम्भ करते है। भगवान शिव दशरथ नंदन श्रीराम को देखकर प्रणाम करते है और सती पूछ बैठती है ये कौन है? भगवान शिव द्वारा भगवत महिमा बताने के बाद भी सती को विश्वास नही होता और तब भगवान शिव ने परीक्षा लेने की अनुमति दे देते है। थोड़ी देर तक कथा यहीं पर पारिवारिक संबंधों, पति–पत्नी के बीच परस्पर विश्वास के महत्व को रेखांकित करने लगती है। कथाव्यास कहतें है कि परस्पर विश्वास पर ही पारिवारिक संबंधों का महल टिका रहता है। अविश्वास परिवार तोड़ता है। संबंधों की डोर कमजोर करता है। भगवान शिव से अनुमति लेकर जब सती भगवान राम की परीक्षा लेने चलती है तो वे जिस सीता के वियोग में राम भटक रहे है उसी जगद्जननी सीता का रूप धारण करती हैं। श्रीराम उन्हे देखकर पहचान जाते है और प्रणाम करते है। श्रीराम ब्रह्म हैं, उनसे कुछ भी छिपा नही है और अपनी पहचान बताने हेतु वे फिर लीला करते है और सती के चारो तरफ सीता, राम और लक्ष्मण दिखाई देने लगते है। सती का भ्रम टूटता है वे संकोच से भगवान को प्रणाम करते हुए शिव के पास वापस लौटती है। ध्यानस्थ शिव सती के आने पर कहते हैं कि भगवान की परीक्षा कैसे ली यह सच–सच बताना। पहली बार शिव ने सती से सच बोलने को कहा और पहली बार सती झूठ बोल गई। शिव को सब पता था वे सती को अपनी परम आराध्या मिथिलेश नन्दनी को देख चुके थे और यही से शिव ने सती को जगद्जननी सीता के रूप में देखते हुए अखण्ड समाधि ले ली।

कथा आगे बढ़ती है दक्ष के यज्ञ और सती के यज्ञ में पहुॅचने तथा वहॉ शिव के अपमान सह न पाने के कारण यज्ञाग्नि में कूदने से लेकर पुनः पार्वती के रूप में जन्म लेने के संदर्भों को छूते हुए पार्वती की कठोर तपस्या, भगवान शिव के प्रसन्न होने तथा शिव विवाह पर टिक जाती है। इसी बीच कथाव्यास कहते है कि भगवान अहंकारियों के अहंकार खाते हैं तथा भक्तों के भाव को भोग लगाते है। भगवान भक्तों के लिए, संतो के लिए धरती पर अवतरित होते है, यहॉ तक कि वे विषपान भी करते है। संतो का राजनीति में आना भी विषपान के समान ही है। संत भी लोक कल्याण एवं लोक मंगल के लिए राजनीति का विषमान करते है। इस पीठ के महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज, महंत अवेद्यनाथ जी महाराज और अब योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने भी लोक मंगल एवं लोक कल्याण के लिए ही राजनीति की चादर ओढ़ी है और उद्देश्य पूर्ण कर जस की तस रख दीनी चदरिया के तर्ज पर वेदाग रहते है। भगवान भी कहते है कि मेरी वास्तविक पूजा

अपने कर्म से करों। इस पीठ के राजनीति में आने से ही राजनीति पर संत का रंग चढ़ा, उसपर समत्व का रंग चढ़ रहा है, आध्यात्म का रंग चढ़ रहा है, धर्म का रंग चढ़ रहा है और अंततः राज्य लोक कल्याण को समर्पित होता जा रहा है।

कथा समसामयिक प्रसंगों के साथ पुनः करवट लेती है और फिर शिव–पार्वती विवाह की ओर बढ़ जाती है। कथाव्यास कहते है कि भगवान शिव की बारात, बंचितो, दलितों, वनवासियों, गिरिवासियों के उत्सव का प्रतीक है। भगवान और संत का हर कार्य ऐसा ही होता है जो दुःखियों, वंचितों को सम्मान दे सकें। शिव की बारात और शिव को देखकर पार्वती की मां के मन में दुविधा उत्पन्न होती है जिसका निराकरण स्वंय पार्वती करती है और कथाव्यास फिर जीवन का एक सूत्र देते है कि जीवन नीरस होने लगे तो भगवत भजन में मन लगाये, दुविधा दूर होगी और जीवन सरस हो जायेगा। प्राणी को सदैव दो चीजे याद रखनी चाहिए एक मृत्यु और दूसरा भगवान। गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हुए जो भी इस सूत्र को पकड़कर धर्म की डोर पकड़े रहता है वह सन्मार्ग से कभी नही भटकता। हम कर्म रूपी कमंडल इस दुनियां में आये है और हमें उतना ही पानी मिलेगा जितना हमारे कर्म के कमंडल में आयेगा। सुख और दुःख दोनों जीवन के अभिन्न हिस्से है। दोनों को समान भाव से स्वीकार करने वाला साधक ही मृत्यु लोक का आनन्द लेता है। कथा भगवान शिव और पार्वती के विवाह के साथ विश्राम लेती है।

आज कथा के मुख्य यजमान ओम प्रकाश कर्मचंदानी, अजय सिंह, अवधेश सिंह, सीताराम जायसवाल, जवाहर कसौधन, महेश पोद्दार ने परिवार सहित व्यासपीठ का पूजन–अर्चन किया। कथाव्यास के साथ हरमोनियन पर दीनदयाल तिवारी, वैंजो पर दीलिप कुमार, वासुरी पर रमाशंकर मिश्र, पैड पर शेखर, तबला पर रामरंजन मिश्र के वाद्ययंत्रों एवं स्वामी सर्वेश दास तथा अभिषेक शर्मा के कोरस ने कथा को संगीतमय मनाने तथा रूचिकर बनाने में सफल हुई। कथा की व्यवस्था गोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य एवं विद्यार्थियों ने संभाल रखी थी तथा मंच संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया।

युगपुरुष
जी महाराज की उन्चासवीं
राष्ट्रसंत
जी महाराज की चतुर्थ
समारोह 2018